BA-I
Paper-II
Unit-3

Dr. Raj Gopal,
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
Mail ID :- rajgopal7755@gmail.com

Topic :⇒ Descartes : Cogito Ergo Sum.
(देकार्त : मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ)

देकार्त ने अपने दर्शन की शुरुआत सन्देह पद्धति के आधार पर किया है। इसी क्रम में वे संसार की सभी वस्तुओं पर संदेह से पूर्व वह स्वयं अपनी सत्ता पर भी संदेह किये थे। देकार्त का मानना है कि "मैं सभी कुछ पर सन्देह कर सकता हूँ, परन्तु सन्देहकर्ता पर मुझे सन्देह नहीं है। सन्देह की क्रिया होती है तो इससे स्वतः कर्ता प्रमाणित है। ज्ञान ज्ञाता के बिना संभव नहीं है। ज्ञान का विषय भ्रम हो सकता है, परन्तु ज्ञाता भ्रम नहीं हो सकता है। जैसे ही मैंने सोचा सब कुछ मिथ्या या भ्रम है, वैसे ही यह अनिवार्यतः सिद्ध हो गया कि 'मैं जिसने यह सोचा अवश्य कुछ हूँ'। इसलिए यह प्रमाणित हो गया कि "मैं सोचता हूँ, इसलिए मेरी सत्ता है"। (Cogito Ergo Sum.)

"मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ" यह एक स्पष्ट एवं विवेकपूर्ण ज्ञान है। यह सिद्धान्त ही देकार्त की ज्ञानमीमांसा का मूल आधार एवं उनकी तत्त्वमीमांसा का प्रारंभिक बिन्दु है। वस्तुतः देकार्त की संदेह पद्धति इसी असंदिग्ध एवं अकाट्य स्वतः सिद्ध सत्य पर पहुँचने का साधन है। देकार्त यह प्रमाणित करते हैं कि संदेह करना संदेहकर्ता (आत्मा) की ओर संकेत करता है। तार्किक रूप से चिंतन करने से चिंतक का अस्तित्व स्वयं सिद्ध हो जाता है। आत्मा का प्रमाण न तो इन्द्रियानुभव पर न ही लौकिक ज्ञान पर आधारित है। यह अन्तःप्रज्ञा से

इत्यन्त स्वयं सिद्ध ज्ञान है। देकार्त का संदेह संदेहकर्ता आत्मा के स्वतः सिद्ध हो जाने के बाद समाप्त हो जाता है। तात्पर्य यह है कि आत्मा की सत्ता ज्ञान की पूर्व मान्यता है। आत्मा के अभाव में ज्ञान निराश्रय तथा निराधार होगा। यह अनुमानजन्य नहीं स्वतः प्रमाणित सत्ता है।

मनुष्य की चिंतनशीलता के द्वारा ही उसके अस्तित्व को प्रमाणित किया जाता है। देकार्त चिंतन को ही आत्मा का अनिवार्य गुण माना है। देकार्त के दर्शन में 'मैं' और 'चिंतन' में अविच्छेद्य संबंध है। चिंतनशील होने के कारण ही आत्मा विभिन्न भौतिक वस्तुओं यहाँ तक की अपने शरीर से भी भिन्न है। मैं भौतिक शरीर नहीं हूँ बल्कि उसका स्वामी हूँ। इस प्रकार आत्मा की सत्ता शरीर से स्वतंत्र और भिन्न है। उसका ज्ञान स्पष्ट और विशेषपूर्ण है। इस प्रकार आत्मा की स्वतः सिद्ध है, क्योंकि स्पष्टता और विशेषपूर्णता देकार्त के दर्शन में सत्यता की कसौटियाँ हैं। देकार्त ने 'चिंतन करना' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया है। इसके अन्तर्गत संशय करना, समझना, कल्पना करना, किसी वस्तु को स्वीकार या अस्वीकार करना इत्यादि सम्मिलित है। चिंतन करना (Cogito) चेतन आत्मा का मुख्य व्यापार है। इसलिए चेतन आत्मा स्वतः सिद्ध है। यह एक अन्तः प्रज्ञात्मक अनुभूति (Intuitive Experience) है। इसका अस्तित्व किसी प्रमाण पर आधारित नहीं है।

Scanned with CamScanner

'मैं ज्ञाता हूँ, इसलिए मेरी सत्ता अनिवार्यतः सिद्ध है' इसके संबंध में निम्न बातें रेखांकित हैं।

(i) 'मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ' यह अनुमान नहीं वरण वास्तविक अनुभूति है। तात्पर्य यह है कि जो ज्ञाता है उसकी सत्ता अनिवार्य है। इसे निगमन के द्वारा नहीं निकाला जा सकता है। यह तो ज्ञान की पूर्व मान्यता है।

(ii) मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ। इससे स्पष्ट सिद्ध है कि मानसिक क्रियाएँ आत्मा के अस्तित्व पर ही निर्भर है। परन्तु इसी प्रकार शारीरिक क्रियाओं के आधार पर आत्मा के अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ के समान मैं भोजन करता हूँ, इसलिए मैं हूँ नहीं कहा जा सकता है। भोजन करना शारीरिक क्रिया है। इससे आत्मा का अस्तित्व नहीं वरण शरीर का अस्तित्व प्रमाणित होता है।

(iii) 'मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ' इससे स्पष्ट है कि ज्ञाता होने के कारण आत्मा की सत्ता स्वतः सिद्ध है। इससे स्पष्ट पता चलता है कि ज्ञान आत्मा का गुण है अर्थात आत्मा का धर्मी है। ज्ञान तथा आत्मा में गुण-गुणी धर्म धर्मि का संबंध है।

(iv) 'मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ' का अर्थ है कि मेरी सत्ता चिन्तन करने पर निर्भर है। चिन्तन

के अनेक स्वरूप हैं, जैसे संदेह करना, समझना, स्वीकार करना, अस्वीकार करना, इच्छा करना, कल्पना करना आदि। ये सभी मानसिक क्रियाएँ हैं, इसकी सत्ता आत्मा पर निर्भर है। तात्पर्य यह है कि यदि मैं (आत्मा) नहीं तो स्वीकार अस्वीकार आदि सभी क्रियाएँ भी नहीं होंगी।

(v) 'मैं सोचता हूँ, इसलिये मैं हूँ' यह सर्वप्रथम असन्दिग्ध निश्चयात्मक ज्ञान है। यही सर्वप्रथम निस्संदेह सत्य है जो संदेह के माध्यम से प्राप्त होता है। देकार्त इसे सर्वप्रथम असंदिग्ध एवं स्वतः सिद्ध ज्ञान मानते हैं। यही सत्य का मापदण्ड है। आत्मा के समान असन्दिग्ध स्वतः सिद्ध जो भी सत्य है वह मान्य है।

देकार्त के दर्शन की 'मैं सोचता हूँ, इसलिये मैं हूँ' के उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि देकार्त की ज्ञानमीमांसा जिसकी शुरुआत संदेह से होती है कि मैं (आत्मा) प्रथम स्वतः सिद्ध सत्ता है। इसी को आधार बनाकर अन्य ज्ञानमीमांसीय तर्कों को निगमित किया गया है। ठीक ही देकार्त के तत्वमीमांसा का भी प्रथम तत्व आत्मा ही है। इसकी सत्ता चिंतन से प्रमाणित है। इसी के आधार पर अन्य द्रव्यों ईश्वर और जड़ पदार्थों की सत्ता को तार्किक दृष्टिकोण से प्रमाणित किया गया है। इस प्रकार से आत्मा की सत्ता देकार्त के दर्शन का प्रथम मूल बिन्दु है।

एवं